13.03.2026

केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड
मीडिया और जन-संपर्क शाखा

हिंदी कार्यक्रम

राजभाषा हिंदी को प्रोत्साहन देने की दृष्टि से 12 मार्च 2026 को मीडिया और जन-संपर्क शाखा में हिंदी कार्यक्रम "अनुगूँज" का आयोजन किया गया। इसमें सभी अधिकारी/कर्मचारीगण शामिल हुए। यह गतिविधि श्रीमती निति शंकर शर्मा, संयुक्त निदेशक के पर्यवेक्षण और देखरेख में आयोजित हुई। जैसा की शीर्षक से स्पष्ट है, यह हिंदी गतिविधि किसी एक लेखक/कवि या साहित्यकार विशेष पर केन्द्रित न होकर, साहित्य संसार से चुनी हुई रचनाओं पर आधारित थी जहां कोई भी अधिकारी/कर्मचारी किसी भी लेखक/कवि की हिंदी में रचनाओं की प्रस्तुति दे सकता था। कार्यक्रम में विभिन्न लेखकों-कवियों की रचनाओं के माध्यम से प्रतिभागियों के साहित्यिक विचार, भावनाएँ और अभिव्यक्तियाँ प्रतिध्वनित हुई।

इस कार्यक्रम में अधिकारी/कर्मचारीगण द्वारा निम्न सारणी अनुसार प्रस्तुतियाँ दी गई:-

1. श्रीमती मीनाक्षी, अधीक्षक ने श्रीकांत वर्मा की कविता "बाबर और समरकन्द" का पाठ किया और उसके माध्यम से इतिहासबोध, मानवीय संवेदना, स्मृति और सत्ता के मनोविज्ञान को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया। उन्होंने लक्ष्य की निरंतर तलाश, सत्ता और विजय की क्षणभंगुरता तथा मनुष्य की अनवरत आकांक्षा और विडम्बना को प्रभावपूर्ण ढंग से अभिव्यक्त किया:-

   कविता के कुछ अंश

   बाबर का सवाल
   बाबर के पास लौट आता है।

   बाबर सिज़दे में झुकता है
   शहर देख रुकता है,

   'समरकंद! समरकंद!' बुर्ज़ देख
   बाबर किलकारी भरता है।

   'समरकंद पीछे रह गया है!'
   कहता हुआ शहरयार

   बाबर के पास से गुज़रता है।
   बाबर समरकंद के रास्ते पर है

   समरकंद बाबर के रास्ते पर।

2. श्रीमती समोला, अधीक्षक ने अंकुश कुमार की कविता 'दिशाएँ ये नहीं कहतीं' का पाठ किया और इसके माध्यम से अनकही भावनाओं की सूक्ष्म अभिव्यक्ति, प्रेम की अंतर्निहित अनुभूति तथा शब्दों से परे मौजूद संवेदनाओं की सुंदरता को प्रभावपूर्ण ढंग से प्रस्तुत किया।

   दिशाएँ ये नहीं कहतीं
   कि एक समय बाद वे एक हो जाएँगी
   शब्द नहीं कहते
   कि हमें कविता में तब्दील होना है
   मैं नहीं कहता
   कि मुझे तुमसे प्रेम है
   परंतु इस न कहने में

एक कहन है
जिससे परिचित हैं सभी
सुंदर होती है दुनिया जिससे
रोज़ थोड़ी-थोड़ी

3. इस अवसर पर श्रीमती लेइवोन ग्रेस कोम, अनुभाग अधिकारी ने हिंदी के संबंध में अपने अनुभव साझा किए। उन्होंने बताया कि हिंदीत्तर क्षेत्र से होने के बावजूद उन्होंने कार्य के दौरान हिंदी को सीखने और प्रयोग में लाने का निरंतर प्रयास किया। उन्होंने कहा कि हिंदी ने विभिन्न क्षेत्रों और भाषायी पृष्ठभूमि के लोगों के बीच संवाद स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उन्होंने अपने अनुभवों के माध्यम से यह भी रेखांकित किया कि निरंतर अभ्यास और प्रोत्साहन से हिंदी को सहज रूप से अपनाया जा सकता है।

4. कार्यक्रम के दौरान श्रीमती रेशमा, वरिष्ठ निजी सचिव ने उपस्थित अधिकारी/कर्मचारियों को हिंदी में अधिकाधिक कार्य करने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने कहा कि राजभाषा हिंदी का प्रयोग केवल औपचारिकता न होकर कार्य-संस्कृति का स्वाभाविक हिस्सा होना चाहिए। उन्होंने सभी को सरल, सहज और व्यवहारिक हिंदी अपनाने के लिए प्रेरित किया।

5. श्री देवेंद्र, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी ने नरेश सक्सेना की कविता "पार" का पाठ किया और इसके माध्यम से यह भाव प्रस्तुत किया कि किसी भी चुनौती, समस्या या सत्य को समझने के लिए केवल सतही रूप से गुजरना पर्याप्त नहीं होता, बल्कि उसके भीतर उतरना आवश्यक होता है। कुछ अंश:

पुल पार करने से
पुल पार होता है

नदी पार नहीं होती
नदी पार नहीं होती नदी में धँसे बिना

नदी में धँसे बिना
पुल का अर्थ भी समझ में नहीं आता

साथ ही उन्होंने कहा कि ऐसे साहित्यिक एवं भाषायी कार्यक्रम हिंदी के प्रति रुचि जागृत करने तथा अभिव्यक्ति की क्षमता को प्रोत्साहित करने में सहायक होते हैं। उन्होंने राजभाषा के संवैधानिक प्रावधानों का उल्लेख करते हुए दैनिक कार्यालयी कार्यों, टिप्पणियों, पत्राचार तथा संप्रेषण में हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने पर विशेष बल दिया।

6. सुश्री रेनू कैथ, अधीक्षक द्वारा निधि नरवाल की एक भावपूर्ण कविता का पाठ किया गया, जिसमें जीवन की वास्तविकताओं और अनुभवों के माध्यम से व्यक्ति के परिपक्व होने की प्रक्रिया को संवेदनशील ढंग से व्यक्त किया गया। प्रस्तुत कविता का अंश —

जब रोककर खिलौने लेने वाला
मुस्कुरा कर जख्म लेता है,
जब पत्थर जैसे दिल वाले को कोई फूल सा तोड़ देता है,
जब जान से ज़्यादा प्यारा कोई रास्ते में तन्हा छोड़ देता है,
ज़िंदगी तब समझ में आती है।

जब दोस्त बनाने से ज़्यादा अकेला रहना आसान लगता है,
जब डायरी में रखा सूखा गुलाब ज़रूरी सामान लगता है,
जब शीशे में दिखाई देने वाला कोई अनजान लगता है,
ज़िंदगी तब समझ में आती है।

जब रोना आए तो रोया नहीं जाता,
जब हम इतने बड़े हो जाते हैं कि घर की लड़ाइयों के बीचों-बीच आकर खड़े हो

जाते हैं,
जब कोई पूछे — सब ठीक है ना? और हम सब ठीक बताते हैं,
ज़िंदगी तब समझ में आती है।

7. सुश्री नेहा खेड़ा, निजी सहायक ने श्री राम के आगमन और अयोध्या में राम मंदिर निर्माण से जुड़ी भावनाओं को अभिव्यक्त करती एक कविता का पाठ किया। उनकी प्रस्तुति में श्रद्धा, उल्लास और सांस्कृतिक आस्था का भाव स्पष्ट रूप से परिलक्षित हुआ। कविता के कुछ अंश:

राम आए हैं, राम आए हैं,
कितने वर्षों के बाद राम आए हैं।
देशवासियों के घर राम आए हैं,
अयोध्या नगरी में मेरे राम आए हैं।

गूँजी खुशियाँ चारों ओर,
बाजे नगाड़े चारों ओर- राम आए हैं।
लगे जयकारे चारों ओर,
लोग नाचे चारों ओर—राम आए हैं।

8. श्री आशीष कुमार ने प्रेरक भावों से युक्त कविता "ज़िंदगी की सीख" का प्रभावपूर्ण पाठ किया। इस कविता से संघर्ष, धैर्य और आत्मविश्वास के साथ जीवन की चुनौतियों का सामना करने का संदेश दिया गया।

गुज़र रही है उम्र, पर जीना अभी बाकी है।
जिन हालातों ने पटका है ज़मीन पर,
उन्हें उठकर जवाब देना अभी बाकी है।

चल रहा हूँ मंज़िल के सफर में,
मंज़िल को पाना अभी बाकी है,
कर लेने दो लोगों को चर्चे मेरी हार के,
कामयाबी का शोर मचाना अभी बाकी है।

वक़्त को करने दो अपनी मनमानी,
मेरा वक़्त आना अभी बाकी है,
कर रहे हैं सवाल मुझपर जो हारा समझ कर,
उन सबको जवाब देना अभी बाकी है।

9. सुश्री उपाली ने ओमप्रकाश वाल्मीकि की कविता 'ठाकुर का कुआँ' की पंक्तियों का पाठ करते हुए सामाजिक विषमताओं को मार्मिक ढंग से अभिव्यक्त किया। <u>कविता के कुछ अंश :</u>

चूल्हा मिट्टी का
मिट्टी तालाब की

तालाब ठाकुर का।
भूख रोटी की

रोटी बाजरे की
बाजरा खेत का

खेत ठाकुर का।.....

गली-मुहल्ले ठाकुर के

फिर अपना क्या?

गाँव?
शहर?
देश?

10. श्री पीयूष मिश्रा की एक संवेदनशील कविता का पाठ कर श्री तनुज वत्स उपस्थित सभी श्रोताओं को स्मृतियों की दुनिया में ले गए।

<u>कुछ अंश:</u>

वो पुराने दिन
वो सुहाने दिन
ओस की नमी में भीगे
वो पुराने दिन
दिन गुजर गए
हम किधर गए
पीछे मुड़ के देखा पाया
सब ठहर गए
अकेले है खड़े
कदम नही बढ़े
चल पड़ेंगे जब भी कोई
राह चल पड़े
जायेंगे कहां
है कुछ पता नही
कह रहे है वो
हमारी है खता नही
वो पुराने दिन
आशिकाने दिन

11. सुश्री साक्षी ने प्रसिद्ध शायर साहिर लुधियानवी की अत्यंत मार्मिक रचना "जिन्हें नाज़ है हिन्द पर वो कहां हैं" का प्रभावपूर्ण पाठ किया। उनकी प्रस्तुति में कविता की सामाजिक संवेदना और प्रश्नाकुलता पूरी गहराई के साथ उभरकर सामने आई। उन्होंने लय और भावपूर्ण अंदाज़ में यह रचना सुनाई, जिसने उपस्थित श्रोताओं को गहराई से प्रभावित किया:-

ये कूचे, ये नीलामघर दिलकशी के
ये लुटते हुए कारवां ज़िन्दगी के
कहां हैं, कहां है, मुहाफ़िज़ ख़ुदी के
जिन्हें नाज़ है हिन्द पर वो कहां हैं

ये पुरपेच गलियां, ये बदनाम बाज़ार
ये गुमनाम राही, ये सिक्कों की झन्कार
ये इस्मत के सौदे, ये सौदों पे तकरार
जिन्हें नाज़ है हिन्द पर वो कहां हैं

ये सदियों से बेख्वाब, सहमी सी गलियां
ये मसली हुई अधखिली ज़र्द कलियां
ये बिकती हुई खोखली रंग-रलियां
जिन्हें नाज़ है हिन्द पर वो कहां हैं

12. श्री अमन कुमार ने हिंदी के महत्व पर आधारित एक कविता का पाठ किया, जिसमें हिंदी को संवेदनाओं और सांस्कृतिक मूल्यों की भाषा के रूप में प्रस्तुत किया गया:

हिंदी मात्र भाषा नहीं,
संवेदनाओं का उद्गार है।

पीढ़ी दर पीढ़ी आवंटित
मूल्यों का उपहार है।
एक भाव शैली अनेक
शब्दों का भंडार है,
गद्य पद्य हो, लेखन भाषण-
शब्दावली अपार है।

13. श्री विकास कुमार ने रामधारी सिंह दिनकर की प्रसिद्ध कृति 'रश्मिरथि' से "कृष्ण की चेतावनी" प्रसंग का ओजपूर्ण पाठ प्रस्तुत किया। उनकी प्रभावशाली और दमदार प्रस्तुति ने काव्य के वीर रस तथा नैतिक चेतना को अत्यंत सजीव बना दिया, जिसे उपस्थित प्रतिभागियों ने खूब सराहा।

'दो न्याय अगर तो आधा दो,
पर, इसमें भी यदि बाधा हो,
तो दे दो केवल पाँच ग्राम,
रक्खो अपनी धरती तमाम।
हम वहीं खुशी से खायेंगे,
परिजन पर असि न उठायेंगे!

दुर्योधन वह भी दे ना सका,
आशीष समाज की ले न सका,
उलटे, हरि को बाँधने चला,
जो था असाध्य, साधने चला।
जब नाश मनुज पर छाता है,
पहले विवेक मर जाता है।

14. श्री नीरज शैली ने अपनी रचना "कल्पनाओं का संसार" का वाचन किया गया। इसमें जीवन की चुनौतियों के बीच कल्पनाओं और आशाओं के महत्व को भावपूर्ण ढंग से प्रस्तुत किया गया।

कल्पनाओं से भरा ये संसार, जहाँ सब कुछ मेरी कल्पनाओं से भरा था।
बचपन की कल्पनाओं में, हमेशा ही उत्सुक रहता था कि बड़ा हो जाऊँगा जब, तब
हर एक आकाश को छू लूँगा, ऐसी कल्पना करता था।
लेकिन क्या पता था कि ये जीवन है कठिन परीक्षाओं का पथ।
वयस्क होकर पता चला जब, तब कल्पना करने से भी डरता था।
चलते-चलते जीवन के कठिन पथ पर ये भी कल्पना करता था कि बिना कल्पना के
इस छोटे से जीवन का कोई महत्व नहीं है।
ऐसा जानकर फिर से अपनी कल्पनाओं को जीवित रखता था।
अब फिर से जीवन की उथल-पुथल के बीच में, मैं यही कल्पना करता हूँ कि जो भी
हो जीवन की कठिन घड़ी में उसमें भी सुखमय जीवन की कल्पना करता हूँ...

15. इस अवसर पर श्री संजीव कुमार ने हिंदी के महत्व पर आधारित एक अनूठी रचना का पाठ किया। उन्होंने हिंदी के प्रति गर्व, उसके सांस्कृतिक महत्व तथा दैनिक जीवन और व्यवहार में हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने की आवश्यकता पर बल दिया। उनकी प्रस्तुति ने उपस्थित सभी अधिकारी/कर्मचारियों को हिंदी के प्रति सम्मान और आत्मीयता बनाए रखने का संदेश दिया:

अंग्रेज़ी में नंबर थोड़े कम आते हैं,
अंग्रेज़ी बोलने से भी घबराते हैं,
पर स्टाइल के लिए पूरी जान लगाते हैं,
क्योंकि हम हिंदी बोलने से शर्माते हैं।
एक वक्त था जब हमारे देश में हिंदी का बोलबाला था,
माँ की आवाज़ में भी सुबह का उजाला था,
उस माँ को अब हम Mom बुलाते हैं,

क्योंकि हम हिंदी बोलने से शर्माते हैं।
देश आगे बढ़ गया पर हिंदी पीछे रह गई,
इस भाषा से अब हम नज़र चुराते हैं,
क्योंकि हम हिंदी बोलने से शर्माते हैं।
माना, अंग्रेज़ी पूरी दुनिया को चलाती है,
पर हिंदी भी तो हमारी पहचान दुनिया में कराती है।
क्यों न अपनी मातृभाषा को फिर से सर आँखों पर बिठाएँ,
आओ हम सब मिलकर हिंदी को आगे बढ़ाएँ।

16. कार्यक्रम का आयोजन श्रीमती निति शंकर शर्मा, संयुक्त निदेशक के पर्यवेक्षण एवं मार्गदर्शन में किया गया। उन्होंने राजभाषा हिंदी के प्रभावी प्रयोग पर बल देते हुए कहा कि कार्यालयी कार्यों में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देना हम सभी की सामूहिक जिम्मेदारी है। उन्होंने सभी स्टाफ़ सदस्यों से अपना राजकीय कार्य राजभाषा में करने का आग्रह किया। उन्होंने निर्देश दिया कि

1. 'क', 'ख' तथा 'ग' क्षेत्र के साथ मूल रूप से होने वाले हिंदी पत्राचार को वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों के अनुसार बढ़ाया जाए।
2. हिंदी पत्रों के उत्तर अनिवार्यत: हिंदी में दिए जाएं।
3. क और ख क्षेत्र में अंग्रेजी में प्राप्त पत्रों के शत-प्रतिशत उत्तर हिंदी में दिए जाएं तथा जिन पत्रों के उत्तर दिए जाने अपेक्षित न हों, उन पत्रों के उत्तर हिंदी में पावती के रूप में दिए जाएं।

उपर्युक्त के अतिरिक्त अन्य श्रोता कर्मचारीगण ने भी गतिविधि में प्रत्यक्ष/परोक्ष रूप से भाग लिया। सभी ने एकजुट होकर शाखा के कार्य और राजभाषा लक्ष्यों को उत्कृष्टता के साथ पूरा करने की प्रतिबद्धता जताई ।

इसके साथ हिंदी कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

झलकियाँ

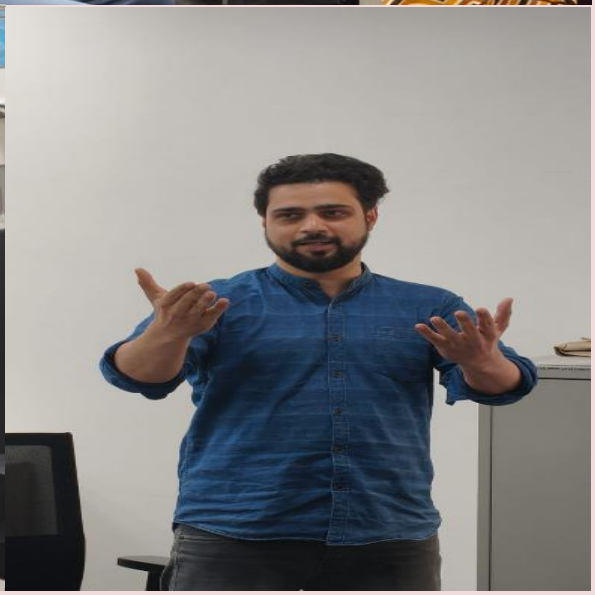

****